डॉ॰ ओमप्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय - संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
तृतीयवर्ष, षष्ठपत्र

पारिभाषिक शब्दावली

① नदी - यू स्त्र्याख्यौ नदी ।
अर्थः - ईदूदन्तौ नित्यस्त्रीलिङ्गौ नदीसंज्ञौ स्तः ।
दीर्घ ईकारान्त और ऊकारान्त नित्यस्त्रीलिङ्गी शब्द नदीसंज्ञक होते हैं।
यथा - गौरी, नदी, वधू आदि ये शब्द नित्य-स्त्रीलिङ्ग हैं । नित्य स्त्रीलिंग उन शब्दों को कहते हैं जिनका प्रयोग केवल स्त्रीलिङ्ग में ही होता है। अन्य लिङ्ग में नहीं ।

② उपसर्जन - प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् ।
1/2/43
अर्थः - समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टमुपसर्जनसंज्ञं स्यात् ।
समास विधान करनेवाले सूत्रों में प्रथमाविभक्ति से जिस पद का निर्देश किया जाता है उसे 'उपसर्जन' कहते हैं।
उदा॰ - हरि + ङि + अधि यहाँ 'अधि' अव्यय है और समासविधायक सूत्र में प्रथमाविभक्ति से निर्दिष्ट है, अतः उसकी उपसर्जनसंज्ञा होती है।

Scanned with CamScanner

Date ______
Page ______

③ उपपद - तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् । ३।१।९२
अर्थ:- सप्तम्यन्ते पदे कर्मणीत्यादौ वाच्यत्वेन स्थितं यत् कुम्भादि तद्वाचकं पदमुपपदसंज्ञं स्यात् ।
धात्वधिकार में सप्तमी विभक्ति से निर्दिष्ट पद उपपदसंज्ञक होता है। उदाहरण के लिए 'कर्मण्यण्' ३।२।१ सूत्र धात्वधिकार में आया है, अतः इस सूत्र में सप्तमी विभक्ति से निर्दिष्ट 'कर्म' पद उपपदसंज्ञक होता है।

④ निष्ठा - क्तक्तवतू निष्ठा। १।१।२६
अर्थ:- एतौ निष्ठासंज्ञौ स्तः।
'क्त' और 'क्तवतु' इन दो प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं।

⑤ अपृक्त - अपृक्त एकाल् प्रत्ययः। १।२।४१
अर्थ:- एकाल् प्रत्ययो यः, सोऽपृक्तसंज्ञः स्यात् ।
एक अल् अर्थात् एक वर्ण वाला प्रत्यय अपृक्त-संज्ञक होता है।
उदाहरण के लिए 'सखान् + स्' में 'स्' प्रत्यय है और साथ ही एकाल् -(एकवर्णवाला) भी है, अतः इसकी अपृक्त संज्ञा होती है।